# शिक्षक सम्मान सम्मेलन, कोटा में माननीय अध्यक्ष महोदय का संबोधन

---

**1.** सबसे पहले मैं यहां उपस्थित आप सभी गुरूजनों को प्रणाम करता हूँ। आपके अथक प्रयास, मेहनत, परिश्रम, निष्ठा एवं समर्पण के कारण ही आज आजादी के 75 साल बाद देश हर क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता साबित कर रहा है। यह हमारे देश के सभी गुरूजनों के सामूहिक प्रयासों से ही संभव हो सका है।

**2.** आज हम हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का पुण्य स्मरण कर रहे हैं। उन्होंने कहा था कि अपने छात्रों को देश की सभ्यता और संस्कृति से जोड़ते हुए भावी नागरिक के रूप में तैयार करना ही एक शिक्षक का सबसे पवित्र कर्त्तव्य है।

**3.** हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का बहुत बड़ा योगदान था। गुरूकुल शिक्षा प्रणाली में जहां एक ओर राजाओं के बच्चे पढ़ते थे, वहीं सामान्य और गरीब बच्चे भी एक साथ शिक्षा ग्रहण करते थे।

**4.** गुरूकुल परंपरा में माता-पिता अपने बालकों को शिक्षा, संस्कार और ज्ञान अर्जित करने के लिए गुरूओं को सौंप देते थे। इसके बाद बालकों के जीवन निर्माण का काम गुरूजन करते थे। इन गुरूकुलों में गुरूजन भी पूर्ण समर्पण और निष्ठा के साथ अपने शिष्यों को सिर्फ ज्ञान ही नहीं देते थे, बल्कि उनका चरित्र निर्माण भी करते थे और उनके संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करते थे।

**5.** साथियो, माता-पिता बच्चों को जन्म देते हैं, पर गुरू उन्हें जीवन देता है। जीवन के अंदर गुरू अपना सब कुछ विद्यार्थियों के लिए समर्पित कर देता है।

**6.** जो कुछ भी उसके पास होता है, वह सब कुछ विद्यार्थियों की शिक्षा और उनके चरित्र निर्माण के लिए अर्पित कर देता है।

**7.** मित्रों, हमारी संस्कृति में शिक्षकों को श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखा जाता है। उन्हें ईश्वर के बराबर स्थान दिया जाता है। हमारे शास्त्रों में गुरू को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समतुल्य माना गया है।

**8.** वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आजादी के 75 वर्षों की इस यात्रा में हमारे देश में अभूतपूर्व प्रगति हुई है, लोगों के जीवन में व्यापक सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन हुए हैं। इस परिवर्तन में अगर सबसे बड़ा योगदान है, तो वह शिक्षा का है।

**9.** आज के बदलते भारत में, बदलती परिस्थितियों के अंदर, भारत के नौजवानों की बौद्धिक क्षमता, उनकी सोच और उनकी योग्यता के कारण आज दुनिया के अंदर भारत का नौजवान हर प्रोफेशनल सेक्टर में नेतृत्व की भूमिका निभा रहा है।

**10.** हमारे नौजवानों की क्षमता अद्‌भुत है, वे सशक्त हैं, समर्थ हैं। आज बस हमारे इन युवाओं को सही दिशा देने की आवश्यकता है। उनमें यह आत्मविश्वास जगाने की आवश्यकता है कि वे दुनिया के अंदर बड़े से बड़ा बदलाव ला सकते हैं, असंभव को भी संभव बना सकते हैं।

**11.** हमारे छात्रों में ऐसा आत्मविश्वास शिक्षक ही जगा सकते हैं ताकि आज के बदलते परिप्रेक्ष्य में शिक्षा, कौशल, अनुसंधान इत्यादि सभी क्षेत्रों में हमारे नौजवानों की क्षमता का बेहतर इस्तेमाल हो सके।

**12.** इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज जानकारी के स्रोत बढ़े हैं। सूचना प्राप्त करने के साधनों की अब कोई सीमा नहीं है। परंतु, चरित्र और व्यक्तित्व निर्माण का काम आज भी सिर्फ शिक्षक ही कर सकता है।

**13.** हर शिक्षक का यह कर्त्तव्य है कि वे भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत से जोड़ते हुए विद्यार्थियों को आधुनिक विश्व की चुनौतियों के लिए सक्षम बनाएं।

**14.** सांस्कृतिक चेतना और मानवीय मूल्यों के साथ आधुनिक तकनीक और प्रौद्योगिकी में संतुलन स्थापित करे।

**15.** आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नए इनोवेशन और नई टेक्नोलोजी के ज्ञान की कोई कमी नहीं है। लेकिन, इस पश्चिमी शिक्षा पद्धति से छात्रों के भीतर तनाव पैदा होता है, बच्चे बहुत जल्दी अवसाद (depression) से ग्रस्त हो जाते हैं।

**16.** लेकिन, हमारे देश में हमारे शिक्षकों ने अपने विद्यार्थियों को हमारी प्राचीन संस्कृति से और अपने संस्कारों से जोड़कर रखा है। यही कारण है कि हमारे विद्यार्थी न सिर्फ ज्ञान-विज्ञान में तरक्की कर रहे हैं, बल्कि उनकी मानसिक शक्ति और बौद्धिक चेतना का विकास भी हो रहा है।

**17.** भारतीय चिंतन परंपरा के अनुसार हमारे शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक आधारशिला का निर्माण किया जाता है।

**18.** शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य भी यही है। यही भूमिका आप सभी शिक्षकों को भी निभानी है।

**19.** जब कभी कक्षा में कोई कमजोर बच्चा हो, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ाएं, उसको मोटिवेट करें ताकि वह अपने अंदर की छिपी प्रतिभा को जान सके, उसे निखार सके। शिक्षक का काम विद्यार्थियों के अंदर विश्वास पैदा करना होता है कि वे अपने सपनों को पूरा करने के लिए न सिर्फ आशावान हों, बल्कि अपनी लगन और कठिन परिश्रम से अपने सपनों को पूरा भी कर सकें।

**20.** यह आप शिक्षकों का दायित्व है कि हमारे इतिहास की जो प्रेरक कहानियां हैं, आजादी के संघर्ष की कहानियां हैं, हमारे महापुरूषों की जीवनियां हैं, उनके बारे में विद्यार्थियों को बताएं ताकि वे उस इतिहास से प्रेरणा ले सकें और कठिन से कठिन परिस्थितियों और चुनौतियों का सामना करते हुए सफलता की दिशा में आगे बढ़े।

**21.** हमारे देश के विद्यार्थियों में ऐसी ऊर्जा और ऐसा दृढ़ निश्चय होना चाहिए कि जो कुछ करना है, वो मैं कर सकता हूँ। छात्र ऐसा महसूस करे कि दुनिया में जो भी परिवर्तन हुए हैं, वह मनुष्यों ने ही किए हैं, तो यह परिवर्तन हम भी कर सकते हैं। शिक्षक उनमें ऐसा आत्मविश्वास भर दें।

**22.** साथियों, तेजी से बदलते इस दौर में हमारे शिक्षकों को भी नित नई व्यवस्थाओं और तकनीकों के बारे में तेजी से सीखना होगा। अच्छा शिक्षक वही होता है, जिसके भीतर का छात्र कभी मरता नहीं है।

**23.** हमारे शिक्षक नवाचारों के वाहक बनें, जो नई-नई तकनीकें हैं, जो नए बदलाव शिक्षण व्यवस्था में उपयोगी हैं, उनसे अपटूडेट रहें। हमारे शिक्षक जब टीचिंग के इन नए तौर-तरीकों से परिचित होंगे, तो वो भविष्य के लिए युवाओं को और भी सहजता से तैयार कर पाएंगे।

**24.** एक विद्यार्थी जब सफल होता है, तब सबसे ज्यादा खुशी उनके शिक्षकों को होती है। वह विद्यार्थी अपने घर-परिवार, देश और समाज का नाम तो रौशन करता ही है, साथ में वह सफलता उस शिक्षक के लिए भी एक उपलब्धि की तरह होती है।

**25.** मेरे जीवन में भी मेरे अध्यापकों का और उनकी दी गई शिक्षा का बड़ा योगदान रहा है। हमारे वे गुरूजन आज भी अपना सान्निध्य मुझे दे रहे हैं, जिन्होंने मुझे प्रारंभिक शिक्षा दी और योग्य बनाया।

**26.** मैंने देखा है कि हमारे शिक्षकों ने शिक्षा के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। उन दिनों जब बिजली नहीं हुआ करती थी, अच्छी सड़कों की सुविधाएं नहीं हुआ करती थीं, कई किलोमीटर तक शिक्षकों

को पैदल जाना पड़ता था, विद्यार्थियों को भी पैदल चलना पड़ता था। पीने के पानी का अभाव था।

**27.** उन परिस्थितियों में भी हमारे शिक्षकों ने समर्पित भाव से अपना कर्त्तव्य निभाया। आज तो विकास के रास्ते खुले हैं, लेकिन आज भी हमें उसी भावना के साथ अपने दायित्वों और कर्त्तव्यों को निभाना है।

**28.** साथियो, किसी भी देश की प्रगति के लिए उसका एजुकेशन सिस्टम समावेशी और समतामूलक होना चाहिए। यानी जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं, उन्हें भी अच्छी शिक्षा मिल सके। इसके लिए तो हमारे देश ने कई कदम उठाए हैं।

**29.** साथ ही, जो दिव्यांग हैं, जो शारीरिक - मानसिक रूप से विशेष बच्चे हैं, उन्हें भी क्वालिटी एजुकेशन मिले, इसके लिए भी हमें समाधान निकालने होंगे।

**30.** आज हमारे देश में 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति' जैसी आधुनिक और दूरदर्शी पॉलिसी है। सरकार की पहल पर हमारी यह नई शिक्षा नीति देश के बड़े-बड़े शिक्षाविदों ने तैयार की है। इसके ड्राफ्ट पर आप शिक्षकों ने सुझाव दिए और तब जाकर यह तैयार हो पाई।

**31.** अब जब इसे जमीन पर लागू करने की बात है, तो इसमें भी आप शिक्षकों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होगी। शिक्षकों की भागीदारी से ही देश की शिक्षण प्रणाली में आमूल-चूल बदलाव संभव है।

**32.** मेरे प्रिय साथियों, आज इस कार्यक्रम में सम्मानित होने वाले हमारे शिक्षकों को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। आप सभी ने कोटा-बूँदी क्षेत्र में शिक्षा के लिए, विद्यार्थियों के भविष्य के लिए जो एकनिष्ठ प्रयास किया है, योगदान दिया है, वह अतुलनीय है, सराहनीय है। आप सबके प्रयासों से ही आज कोटा शिक्षा के क्षेत्र में इतना बड़ा स्थान हासिल कर सका है; देश भर में शिक्षा की काशी के रूप में प्रसिद्ध हुआ है।

**33.** मैं आप सबको एक बार पुनः शुभकामनाएं देता हूँ। नए भारत के निर्माण का दायित्व आपके कंधों पर है।

**34.** आज के दिन हमारा यही संकल्प होना चाहिए कि हमें अपने विद्यार्थियों को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी बनाना है ताकि ''शिक्षित भारत – विकसित भारत'' का हमारा सपना पूरा हो सके। धन्यवाद। जय हिन्द।